Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बस्तर दशहरा का जनजातीय समाज एवं स्थानीय लोगों पर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

डॉ. मीनाक्षी तिवारी*

* सहायक प्राध्यापक (अतिथि) (अर्थशास्त्र) बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा और विशिष्ट लोक-पर्व है, जो लगभग 75 दिनों तक चलता है। यह केवल धार्मिक या सांस्कृतिक आयोजन नहीं बल्कि एक सामाजिक-आर्थिक गतिविधि का केंद्र है। इस पर्व से जनजातीय परंपराएँ, कला, संस्कृति, रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं। इस शोध में बस्तर दशहरा के सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीयऔर आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है, तथा यह देखा गया है कि यह पर्व कैसे जनजातीय पहचान, सामाजिक एकता और आजीविका का माध्यम बन गया है।

प्रस्तावना – भारत के विविध सांस्कृतिक परिदृश्य में बस्तर दशहरा एक अद्वितीय उदाहरण है, जहाँ देवी-देवताओं की पूजा के साथ-साथ आदिवासी परंपराओं, लोककला और लोकविश्वासों का समागम दिखाई देता है। यह पर्व न तो केवल 'राम' या 'रावण' से जुड़ा है, बल्कि देवी 'माई दंतेश्वरी' की आराधना का प्रतीक है।

उद्देश्य – इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि बस्तर दशहरा कैसे बस्तर क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है, तथा इसका स्थानीय जनजातीय समाज के सांस्कृतिक पुनर्जीवन में क्या योगदान है।

अनुसंधान प्रश्न:

1. बस्तर दशहरा का जनजातीय समाज की सामाजिक संरचना पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. इस पर्व से स्थानीय अर्थव्यवस्था में क्या परिवर्तन होते हैं?
3. यह पर्व बस्तर के पर्यटन और हस्तशिल्प उद्योग को कैसे प्रभावित करता है?
4. आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव में बस्तर दशहरा की क्या स्थिति है?

बस्तर दशहरा का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

एतिहासिक पृष्ठभूमि – बस्तर दशहरा का आरंभ लगभग 618 वर्ष पूर्व बस्तर के राजा पुरुषोत्तम देव के शासनकाल में हुआ माना जाता है। यह पर्व देवी दंतेश्वरी की आराधना से जुड़ा है, जो बस्तर राज्य की कुलदेवी मानी जाती हैं।

कहानी – बस्तर के तात्कालिक राजा पुरुषोत्तम देव भगवान जगन्नाथ स्वामी के भक्त थे। प्रभु के दर्शन करने के लिए उन्होंने बस्तर से जगन्नाथ पुरी तक दंडवत यात्रा की थी। कहा जाता है कि उनकी भक्ति से जगन्नाथ स्वामी बेहद खुश हुए थे। जब राजा पुरुषोत्तम देव जगन्नाथ मंदिर पहुंचे तो मंदिर के प्रमुख पुजारी को स्वप्न में भगवान आए।उन्होंने कहा कि राजा की भक्ति से मैं प्रसन्न हुआ हूं। उपहार स्वरूप उन्हें रथपति की उपाधि दी जाए। एक रथ भी भेंट किया जाए। इसके बाद अगले दिन पुजारी ने इसकी जानकारी राजा पुरुषोत्तम देव को दी। पुजारी ने पुरी में ही उन्हें रथपति की उपाधि दी और 16 चक्कों का विशाल रथ भी भेंट किया था। जिसे राजा ने स्वीकार कर लिया था।

आयोजन की विशेषताएं:

1. यह पर्व 75 दिनों तक चलता है।
2. प्रमुख अनुष्ठानरू रथयात्रा, डेरोही, रथ खींचना, जोगी बिठाई, बाईठे पूजा, नवरात्रि पूजा आदि।
3. इस पर्व में 80 से अधिक जनजातीय समुदाय शामिल होते हैं।
4. प्रत्येक जनजाति की अपनी भूमिका होती है, जैसे – रथ निर्माण, पुजारी कार्य, नर्तक दल, देव बोलावना आदि।

क्यों 75 दिन चलता है उत्सव:

1. दरअसल, हरेली अमावस्या से बस्तर दशहरा की शुरुआत मानी जाती है। इस दिन पाट जात्रा विधान किया जाता है। जंगल से रथ निर्माण के लिए लकड़ियां लाई जाती हैं और उनकी पूजा होती है। इसके बाद रथ निर्माण कार्य शुरू होता है। इसके बाद दूसरे जंगल से लकड़ी लाकर डेरी गढ़ाई की रस्म होती है।
2. जहां देवी की पूजा की जाती है। इन दोनों रस्मों के बीच करीब डेढ़ महीने का अंतर होता है। इसके करीब 15 दिन बाद काछनगादी की रस्म होती है और विधिवत रूप से बस्तर दशहरा शुरू हो जाता है। इसके चलते बस्तर दशहरा 75 दिनों तक चलता माना जाता है।
3. नवरात्र से ठीक एक दिन पहले बस्तर राज परिवार के सदस्य काछनगुड़ी जाकर काछन देवी से बस्तर दशहरा मनाने और रथ परिक्रमा की अनुमति लेते हैं। काछनदेवी को रण की देवी भी कहा जाता है। पनका जाति की एक कुंवारी कन्या देवी का अनुष्ठान करती हैं।पिछले 22 पीढ़ियों से इसी जाति की कन्या यह रस्म अदा कर रही है। उस पर देवी सवार होती हैं। इसके बाद बेल के कांटों से बने झूले पर झूलकर राज परिवार के सदस्यों को दशहरा मनाने की अनुमति दी जाती है।

सामाजिक प्रभाव

सामुदायिक एकता – बस्तर दशहरा सामाजिक समरसता का प्रतीक है। विभिन्न जनजातियाँ कृ मुरिया, माड़िया, गोंड, हल्बा, भतरा आदि – एक साथ आकर इस पर्व में भाग लेती हैं, जिससे सामाजिक एकजुटता मजबूत होती है।

क्र.	समुदाय/जनजाति का नाम	मुख्य भूमिका/योगदान
1	मुरिया	रथ खींचना, नृत्य-गीत, देवी की सेवा में भागीदारीदेवी
2	माड़िया	दंतेश्वरी को बुलाने, पूजा-अनुष्ठान में भाग
3	गोंड	पूजा, वाद्य यंत्र व पारंपरिक नृत्य प्रदर्शन
4	हल्बा	व्यापार, खाद्य सामग्री, रथ सजावट में सहयोग
5	भतरा	सांस्कृतिक कार्यक्रम, रथयात्रा में भागीदारी
6	धुरवा	पारंपरिक वेशभूषा व देवी पूजन में भूमिका
7	परजा	हस्तशिल्प, वस्त्र निर्माण और मेले में बिक्री
8	कोया	पूजा व धार्मिक परंपराओं में भाग
9	भुमिया	भूमि देवी की आराधना व पूजा विधि में भूमिका
10	डोकरा/घड़किया	रथ, मूर्तियाँ व पूजा सामग्री का निर्माण
11	लोहार	रथ के लोहे के हिस्से, औजार निर्माण
12	सुतार	रथ निर्माण व सजावट के कारीगर

बस्तर दशहरा...
कब कौन सी रस्म होगी

- **5 सितंबर:** डेरी गड़ाई पूजा विधान।
- **21 सितंबर:** काछनगादी पूजा विधान
- **22 सितंबर:** कालरात्रि स्थापना पूजा विधान
- **23 सितंबर:** जोगी बिठाई पूजा विधान
- **24 सितंबर:** सोमवार से हर दिन नवरात्रि पूजा और रथ परिक्रमा पूजा विधान।
- **29 सितंबर:** सुबह 11 बजे बेल पूजा
- **30 सितंबर:** महाअष्टमी पूजा विधान और निशा जात्रा पूजा विधान
- **1 अक्टूबर:** कुंवारी पूजा विधान और जोगी उठाई पूजा विधान, मावली परघाव
- **2 अक्टूबर:** भीतर रैनी पूजा विधान और रथ परिक्रमा पूजा विधान
- **3 अक्टूबर:** बाहर रैनी पूजा विधान और रथ परिक्रमा पूजा विधान
- **4 अक्टूबर:** सुबह काछन जात्रा पूजा विधान के बाद दोपहर में मुरिया दरबार का आयोजन
- **5 अक्टूबर:** कुटुंब जात्रा पूजा विधान में शामिल देवी-देवताओं की विदाई की जाएगी
- **7 अक्टूबर:** मावली माता की डोली की विदाई पूजा विधान के साथ ऐतिहासिक बस्तर दशहरा पर्व सम्पन्न होगा।

पारंपरिक ज्ञान एवं संस्कृति का संरक्षण – लोकनृत्य, लोकगीत, पारंपरिक वाद्य यंत्र, हस्तकला, वेशभूषा आदि के प्रदर्शन से स्थानीय संस्कृति का संरक्षण होता है। युवा पीढ़ी इन परंपराओं से पुन: जुड़ती है।

1. बेड़ा-उमड़ और झाड़-उमर गांव के ग्रामीणों को रथ निर्माण की जिम्मेदारी दी गई है। पूरे बस्तर में सिर्फ इन्हीं दो गांव के ग्रामीण मिलकर पीढ़ियों से रथ निर्माण करते आ रहे हैं। बस्तर के माचकोट के जंगल से साल, बीजा की लकड़ी लाई जाती है। इसी से रथ का निर्माण किया जाता है।
2. रथ बनाने वाले बुजुर्ग अपने घर के बच्चों को भी साथ लेकर आते हैं। इन्हें परंपरा से अवगत करवाया जाता है। नवरात्र की सप्तमी तक 4 चक्कों वाले फूल रथ कि परिक्रमा होती है। नवमी और विजयादशमी के दिन 8 चक्कों के विजय रथ की परिक्रमा करवाई जाती है। रथ सिर्फ किलेपाल गांव के ही ग्रामीण खींचते हैं।

लैंगिक भूमिका – इस पर्व में महिलाएँ भी पूजा, नृत्य, सजावट और व्यापारिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करती हैं, जिससे सामाजिक समावेशिता बढ़ती है।

आर्थिक प्रभाव

थानीय रोजगार और आय का स्रोत – दशहरा के समय हजारों लोग बस्तर पहुँचते हैं। इससे स्थानीय व्यापार, परिवहन, होटल, भोजनालय और हस्तशिल्प की बिक्री में वृद्धि होती है।

1. लकड़ी, बांस, धातु और मिट्टी के उत्पादों की बिक्री होती है।
2. स्थानीय युवाओं को अस्थायी रोजगार मिलता है।
3. क्षेत्र के पर्यटन आंकड़ों में बताया गया है कि बस्तर में '2021 में 1 लाख से अधिक पर्यटक थे, जबकि 2024 में 40 लाख से अधिक' हो गए।
4. आयोजन के लिए बजट और विकास निवेश के संकेत मिलते हैं - उदाहरण के लिए 2022 में रू85.75 लाख का बजट माँगा गया था।
5. बाकी काफी जंकारिया उपलब्ध न होने के कारण हम एक अंदाजन आकडा निकाल सकते है बस्तर दुशर्य के आर्थिक प्रबाव को समझने के लिए।
6. एकअनुमानित उदाहरण रू मान लें कि 2025 में इस उत्सव में50,000अनूठे बाहरी आगंतुक आए (यह सिर्फ उदाहरण है)।माना कि प्रति आगंतुक औसतन रू3,000 प्रति दिनखर्च करते हों, और उनकी औसत ठहराव 2 दिन हो।

प्रति-व्यक्ति खर्च रू 6,000।प्रत्यक्ष पर्यटन व्यय = 50,000 x रू6,000 = रू30 करोड़।यदि इंडायरेक्ट एवं इनड्यूस्ड प्रभाव के लिए मल्टीप्लायर = 1.7

(उदाहरण) कुल प्रभावकरू30 करोड़ x 1.7 = रू51 करोड़।

पर्यटन और अर्थव्यवस्था – यह पर्व राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। पर्यटन से जुड़े व्यवसाय जैसे गाइडिंग,आवास, सांस्कृतिक प्रदर्शनी आदि क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को सशक्त करते हैं।

भारत के बाहर ओर भारत के अलग अलग कोनों से लोग इस पर्व में शामिल होते है जिससे बस्तर ओर पास के गाँव में पर्यटकों की भीड़ लग जाती है।

बस्तर दशहरा के दौरान लगने वाले मेलों में 'बस्तर आर्ट' डोकरा कला, टेराकोटा, बांस-काष्ठकला की मांग बढ़ती है। इससे शिल्पकारों की आय में वृद्धि होती है।

चुनौतियां एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य

व्यवसायीकरण – पर्यटन और बाजारवाद के कारण पर्व के कुछ पारंपरिक स्वरूप बदल रहे हैं। धार्मिकता के स्थान पर मनोरंजन और व्यावसायिक गतिविधियों पर जोर बढ़ा है जेसे पहले सिर्फ कुछ ही जातियों ओर वर्ग के लोगों को रथ खीचने की अनुमति मिलती थी पर अब खिचने के दौरान काफी ओर लोग भी शामिल हो जाते है। कुछ श्रोत तो ये कहते है की बस्तर के राज्य ने बस्तर के हर जनजातियों को इसस मेले में शामिल करने के लियए हर जनजाति को अलग अलग काम सओपे थे जो आज भी काफी हद तक उन्ही बरगो द्वारा की जाती है।

आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष – नई पीढ़ी में पश्चिमी प्रभाव बढ़ने से कुछ लोक परंपराएँ कमजोर पड़ रही हैं। हालांकि प्रशासन और सांस्कृतिक संस्थान संरक्षण के प्रयास कर रहे हैं। जेसे कुछ लोगों को बकरों ओर मछलियों की बाली से खेद है तो कुछ को राजस्यही ओर उनको मिलने वाली प्रतिसठा से।

पर्यावरणीय प्रभाव – बस्तर दशहरा में हर साल नया रथ बनाने के लिए हर साल करीब 200 से अधिक पेड़ काटे जाते हैं। इस तरह से काटे जाने वाले पेड़ों के चलते आने वाले समय में साल के पेड़ों की कमी नहीं हो इसके लिए बस्तर जिले में वर्ष 2021 में क्षतिपूर्ति पौधरोपण की शुरुआत की गई थी। वन विभाग द्वारा शुरू की गई यह योजना अब तक सफल रही है। लगातार पौध रोपण की मांग के बाद वन विभाग ने इस योजना के तहत अब तक साल के साथ ही अन्य वैरायटी के 915 पौधे लगाए हैं जो लगातार देखभाल के चलते इस समय हरियाली फैला रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि आने वाले सालों में एक छोटा जंगल तैयार हो जाएगा।

जगदलपुर फारेस्ट अधिकारी ने बताया कि क्षतिपूर्ति योजना के तहत माचकोट परिक्षेत्र के बोदामुण्डा गांव में साल 2021 में 365 पौधे, साल 2022 में 300 और माचकोट परिक्षेत्र के नकटी सेमरा में साल 2024 में 250 पौधे लगाए गए। इस साल भी नकटी सेमरा में लगभग 250 पौधे लगाए जाने की योजना है। जानकारी के मुताबिक ओडिशा के जगन्नाथपुरी में हर साल तीन रथ बनाए जाते हैं इसके लिए हर साल वहां पर भी 200 से अधिक पेड़ों की कटाई की जाती है। इसके बदले में करीब चार गुना पौधे लगाए जाते हैं। बस्तर जिले में इस योजना की मांग सालों से की जा रही थी।

निष्कर्ष– बस्तर दशहरा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि बस्तर की सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक जीवनरेखा है। इस पर्व ने जनजातीय समाज को एकजुट किया है, सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा है, और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त किया है।

यद्यपि आधुनिकता और व्यावसायीकरण ने इसके पारंपरिक स्वरूप को प्रभावित किया है, परंतु इसका मूल स्वर– 'जनजातीय एकता, श्रद्धा और संस्कृति' आज भी जीवित है।

सुझाव :

1. स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को सरकारी व निजी सहायता मिले।
2. पर्यटन का विकास पर्यावरणीय दृष्टि से संतुलित हो।
3. पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया जाए।
4. युवाओं को लोककला संरक्षण में प्रोत्साहन मिले।
5. पर्यावरण का ध्यान रख कर सारे पर्व मनाए जाए।
6. पर्व के बारें में आचे से जानकारी ओर आँकड़े आम लोगों तक पहुचे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. बस्तर जिला गजेटियर, छत्तीसगढ़ शासन।
2. शर्मा, आर. के. (2018). छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ और संस्कृति। रायपुररू लोक संस्कृति संस्थान।
3. "Bastar Dussehra: The Longest Festival in the World" – Chhattisgarh Tourism Department Report (2022).
4. Mehta P- (2020)- Socio&Economic Impact of Tribal Festivals in India- New Delhi: Sage Publications.
5. दैनिक भास्कर

****